आरती श्री तुलसी जी की

तुलसी महारानी नमो-नमो, हरि की पटरानी नमो-नमो ।
धन तुलसी पूरन तप कीनो, शालिग्राम बनी पटरानी ।
जाके पत्र मंजरी कोमल, श्रीपति कमल चरण लपटानी ।।
धूप-दीप-नैवेद्य आरती, पुष्पन की वर्षा बरसानी ।
छप्पन भोग छत्तीसों व्यंजन, बिन तुलसी हरि एक न मानी ।।
सभी सखी मैया तेरो यश गावें, भक्तिदान दीजै महारानी ।
नमो-नमो तुलसी महारानी, नमो-नमो तुलसी महारानी ।।

विवरण

जो भगवान विष्णु की पटरानी हैं, ऐसी तुलसी महारानी को नमस्कार है । हे श्री तुलसी जी आप धन्य हो जो शालिग्राम के रूप में प्रभु की पटरानी बन गईं ।
आपके पत्ते एवं मंजरी बड़े ही कोमल होते हैं जो भगवान विष्णु के चरण कमलों में लपटाये रहते हैं ।

आपके पास धूप एव दीपक जलता है तथा आपके ऊपर फूलों की वर्षा होती है । छप्पन प्रकार के भोग एवं छत्तीस प्रकर के व्यंजन पड़े हुए हों परन्तु तुलसी के बिना प्रभु एक भी ग्रहण नहीं करते हैं । सभी सखियाँ एवं माता आपका यश गाती हैं । हे तुलसी महारानी आपको नमस्कार है ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.